ग्रामीण बस्तियाँ
(Rural Settlements)

ग्रामीण और नगरीय बस्तियों में भेद
(Distinction in Urban and Rural Settlements)

जिन बस्तियों के निवासी कृषि और पशुपालन द्वारा जीविका उपार्जन करते हैं, उन बस्तियों को ग्रामीण बस्तियाँ कहते हैं। वन काटने वाले, खान-खोदने वाले, शिकार करने वाले, जंगलों में या पर्वतों पर कन्द-मूल फल आदि भोज्य-पदार्थ इकट्ठे करने वाले और आदिम (primitive) विधियों से मछली पकड़ने वाले मनुष्यों की बस्तियाँ भी ग्रामीण होती हैं।

ग्रामीण बस्तियों की अपेक्षा **नगरीय बस्तियाँ प्रायः बड़ी** हुआ करती हैं, और नगरों में जनसंख्या का घनत्व (density) गाँवों से अधिक होता है। परन्तु केवल जनसंख्या अधिक होने के आधार पर किसी गाँव को नगर नहीं कह सकते, जब तक कि उसके निवासियों की जीविका **निर्माण-उद्योग, व्यापार, परिवहन सेवा,** आदि पर आधारित नहीं हो। कुछ कृषक गाँव की आबादी छोटे नगरों से बड़ी हो सकती है; उदाहरण के लिये, गंगा के ऊपरी मैदान में कुछ कृषक-गाँव 6,000 या 8,000 मनुष्यों से अधिक जनसंख्या के हैं, परन्तु वे कृषि-प्रधान होने के कारण गाँव हैं, जबकि देहली से हापुड़ को आने वाली सड़क पर कई नगरीय (urban) बस्तियाँ ऐसी हैं जिनकी आबादी 4,000 मनुष्यों से भी कम है। चूँकि उन बस्तियों के निवासी कृषि या पशुपालन, आदि का धन्धा नहीं करते, वरन् निर्माण-उद्योग, परिवहन और व्यापार में लगे हुये हैं, इसलिये वे बस्तियाँ नगरीय हैं। 'अध्यात्म नगर', 'मोहन नगर', आदि कई छोटी-छोटी बस्तियाँ निर्माण-उद्योग से सम्बन्धित हैं; ऐसे अनेक उदाहरण दूसरे क्षेत्रों में भी देखने को मिलते हैं। सघनता में भी, कुछ कस्बों की अपेक्षा बड़े गाँवों में अधिक सघन जनसंख्या देखी जाती है।

अतः **नगरीय बस्ती में जनसंख्या की सघनता** (density) के साथ-साथ **गतिशीलता** (mobility) भी अधिक चाहिये। गतिशीलता का सम्बन्ध **टैक्नोलॉजी** से होता है, जिसके द्वारा **क्रमिक श्रम-विभाजन** (division of labour) और श्रम की अदल-बदल (interchangeability of labour) होने लगती है तथा जीवन की लय (tempo of life) बढ़ जाती है। नगरीय जीवन में **सामाजिक विषमतायें** भी अधिक उग्र होती हैं।[1]

मानवीय बस्तियों का पारिस्थिति-विज्ञान
(Ecology of Human Settlements)

मानवीय बस्तियों की स्थिति (location), आकार (size), प्रतिरूप (pattern) और कार्यों (functions) का नियन्त्रण पारिस्थितिक कारकों (ecological factors) के द्वारा होता है। किसी क्षेत्र में निवासों के वितरण की प्रवृत्ति, बस्ती में मकानों की परस्पर दूरी, निवासों के स्थानिक (spatial) प्रतिरूप, वास्तुशिल्प (architecture) की शैली, निर्माण-सामग्री (constructional material) तथा बस्ती की ग्रामीण (rural) अथवा नगरीय (urban) व्यवस्था का निर्धारण उस क्षेत्र के प्राकृतिक और सांस्कृतिक वातावरण के जटिल प्रभावों द्वारा होता है। इसमें भौतिक परिस्थिति, जनसंख्या और उसकी संरचना, टैक्नोलॉजी की अवस्था (stage), दूसरे प्रदेशों से सांस्कृतिक सम्पर्क (cultural contact) की मात्रा और प्रकार तथा पारिस्थितिक अनुक्रम (ecological succession) क्रियाशील रहते हैं।[2]

बस्तियों का केन्द्रीय पक्ष (central aspect) स्वयं जनसंख्या होती है; जिसमें मनुष्यों की संख्या, आयु-वर्ग, स्त्री-पुरुष अनुपात और प्रदेश में उसका वितरण सम्मिलित होते हैं। भौतिक पक्ष के प्राकृतिक वातावरण के तत्व, अर्थात् प्रादेशिक स्थिति, भू-आकृति, जलवायु, ढाल की मात्रा और दिशा (धूपदार या छायादार), खनिज सम्पत्ति, मिट्टियाँ, जलीय संसाधन, प्राकृतिक वनस्पति, जन्तु और अणुजीव सम्मिलित होते हैं। सांस्कृतिक वातावरण में समायोजन की प्रक्रियायें (processes of adjustment), टैक्नोलॉजी की अवस्था, विज्ञान की प्रगति, कला, साहित्य, दस्तकारियाँ, वास्तुशिल्प की शैली, दर्शन, धार्मिक विश्वास, अन्ध-विश्वास, जादू टोने में विश्वास, सामाजिक परम्परायें (traditions), सामाजिक व्यवहार की संहिता (code), अन्य क्षेत्रों से सांस्कृतिक सम्पर्क तथा राजनीतिक नियम होते हैं।

व्यावसायिक पक्ष (occupational aspect) के द्वारा बस्तियों की ग्रामीण या नगरीय अर्थ-व्यवस्था निश्चित होती है। सामाजिक संगठन प्रणाली में और सामाजिक प्रवृत्तियों में अनुक्रमिक परिवर्तनों (successional changes) तथा ऐतिहासिक घटनाओं का प्रभाव भी मानवीय बस्तियों पर होता रहता है। जनसंख्या द्वारा प्रदेश के प्राकृतिक संसाधनों के शोषण और प्रयोग की विधि, स्वास्थ्य और सफाई के स्तर, तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के आदर्शों की छाप मानवीय बस्तियों पर रहती है।[3]

मानवीय निवास की विधि और स्थानिक प्रतिरूप (spatial pattern) से यह स्पष्ट प्रदर्शित होता है कि उस क्षेत्र में पारिस्थितिक कारकों और शक्तियों का सामूहिक समायोजन (collective adjustment) किस प्रकार किया गया है। उस समायोजन के दूरगामी परिणाम होते हैं। जो मानवीय व्यवहार और सामाजिक अभिस्थापन (social orientation) को नियंत्रित करते हैं।[4]

मानवीय बस्तियों की स्थिति, आकृति के कारक, उनके प्रकार, प्रतिरूप और कार्यों (functions) से सम्बन्धित पारिस्थिति-विज्ञान के पाँच पक्ष होते हैं —

1. जनसंख्या पक्ष सबसे मुख्य है, क्योंकि जनसंख्या ही बीज रूप से बस्तियों में निवास करती है। इस पक्ष में, निवास करने वाले मनुष्यों की संख्या, उनके आयु-वर्ग (age groups), स्त्री-पुरुष अनुपात

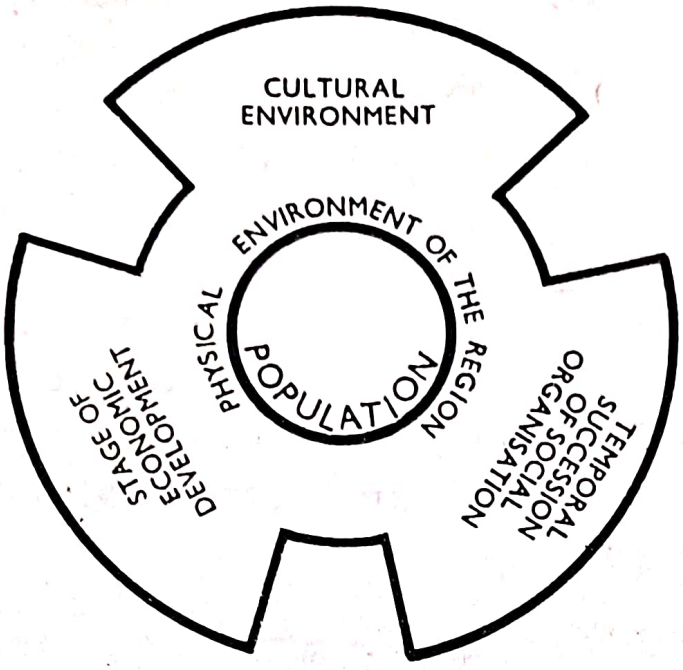

मानवीय बस्तियों का पाँच पक्षीय परिस्थिति-विज्ञान

उनका शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक मनोवृत्तियाँ (tendencies), अभिरुचियाँ (testes) तथा छाँट (selection) सम्मिलित होते हैं।

2. भौतिक पक्ष में निवास के प्रदेश (region) का भौतिक वातावरण होता है, जो बस्तियों की उत्पत्ति (origin) और स्थानिक वितरण (spatial distribution) को निश्चित करता है। अर्थात् भूमि की बनावट, जलवायु, ढाल की दिशा (धूपदार या छायादार), मिट्टियाँ, वनस्पति, जन्तु, खनिज संसाधन, जलीय संसाधन और जीवाणुओं का प्रभाव बस्तियों की स्थितियों और प्रतिरूप पर होता है। इनसे निर्माण-सामग्री भी निश्चित होती है।

3. वर्गीय अर्थव्यवस्था (group economy) के द्वारा यह निश्चित होता है कि कोई बस्ती ग्रामीण होगी या नगरीय अथवा मिश्रित (mixed or rural-urban) होगी।

4. सांस्कृतिक पक्ष (cultural aspect) में बस्तियों के बीच गमनागमन के साधन, मार्ग, सड़कें, बस्तियों में स्थित शिक्षा आदि की संस्थायें, सामाजिक सभाघर, शिक्षालय, वास्तु-शिल्प की शैली (architectural style), अर्थात् मकानों के निर्माण के ढंग, कला, धार्मिक विश्वास, सामाजिक श्रम विभाजन, विज्ञान टैक्नोलॉजी की अवस्था तथा बस्ती-योजना (settlement planning) सम्मिलित होती हैं। इनके द्वारा बस्तियों का विकास और भावी उन्नति होती है।

5. कालिक पक्ष (temporal aspect) में उस क्षेत्र के ऐतिहासिक परिवर्तन और सामाजिक अर्थव्यवस्था की प्रवृत्तियों (socio-economic trends) का अनुक्रम (succession) होता है। इनके द्वारा बस्तियों का आयु-चक्र (age cycle of settlements) गतिमान रहता है; अर्थात् कोई बस्ती अभी शैशवावस्था में है, या युवावस्था में है, या अत्यन्त प्राचीन बस्ती होने के कारण वृद्धावस्था में है, यह विचार बस्तियों का कालिक पक्ष है।

अस्तु, मानवीय बस्तियों पर केवल जनसंख्या और भौतिक वातावरण का ही नहीं वरन् आर्थिक व्यवसायों, धार्मिक विश्वासों, सामाजिक रीतियों, सांस्कृतिक गतियों, ऐतिहासिक घटनाओं और परिवर्तनों तथा राजकीय योजनाओं का भी प्रभाव पड़ता है। परन्तु इनमें जनसंख्या, भौतिक वातावरण और सामाजिक अर्थव्यवस्थायें प्रमुख हैं।

बस्तियों के तत्व
(Elements of Settlements)

प्रत्येक बस्ती में दो प्रकार के तत्व होते हैं — (i) गतिशील (dynamic) तत्व, और (ii) स्थैतिक (static) तत्व।

बस्ती में निवास करने वाले **मानव** जो, मकानों, मार्गों और अन्य सांस्कृतिक वस्तुओं का निर्माण करते हैं तथा बस्ती के आर्थिक और सामाजिक संगठन का निर्माण करते हैं, **गतिशील** तत्व हैं।

मकान और **मार्ग स्थैतिक** तत्व होते हैं। ये तत्व निवास करने बाले मनुष्यों को आश्रय देते हैं, उनके समान ही सुरक्षा करते हैं तथा उनके आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होते हैं। परन्तु मकान और मार्ग स्थिर होते हैं, ये स्वयं कोई गति नहीं करते, वरन् मानव की क्रियाओं द्वारा इनमें गति आती है।

बस्तियों के प्रकार
(Settlement Types)

मानवीय बस्तियाँ चार प्रकार की होती हैं; इन प्रकारों को किसी बस्ती में मकानों या आश्रयों या झोपड़ियों आदि की पारस्परिक दूरी (distance between shelters) के आधार पर निश्चित किया जाता है.—

(1) परिक्षिप्त (dispersed) बस्तियाँ, जिनको बिखरी हुई या प्रकीर्ण (scattered) या एकाकी (isolated) भी कहते हैं।

(2) सघन (compact) बस्तियाँ, जिनको पुञ्जित या संहत (clustered), एकत्रित (agglomerated) अथवा न्यष्टित (nucleated) भी कहा जाता है।

(3) संयुक्त या सम्मिश्र (composite) बस्तियाँ।

(4) अपखण्डित (fragmented) बस्तियाँ।

1. एकाकी बस्तियों को बिखरी हुई या **प्रकीर्ण** बस्तियाँ कहते हैं। इन बस्तियों में अलग-अलग बसे हुए घर, या कृषिगृह (farmstead) या वासगृह (homestead) होते हैं। मकान चाहे पक्के ईंट-पत्थर के बने हों, या छप्पर झोपड़ियाँ हों, अथवा संयुक्त राज्य अमेरिका की सी सीमेंट-कंकरीट-लोहे की बनी विशाल इमारतें हों, यदि वे एक दूसरे से पृथक्-पृथक् बीच में दूरियाँ छोड़ कर या कृषि भूमि को छोड़कर बसे हुए हैं, तो वे एकाकी बस्तियाँ (isolated settlements) कहलाते हैं। इनमें, प्रत्येक घर में केवल एक परिवार निवास करता है। ऐसा हो सकता है कि किसी परिवार के नौकर-चाकर या श्रमिक भी उसी इमारत के किसी कमरे में रहते हों, अथवा स्वामी-परिवार के निवास की इमारत के समीप नौकर लोगों के लिये अलग छोटा-सा घर हो; परन्तु एक परिवार के सदस्यों और उनके नौकरों के निवास के आस-पास बने हुए सभी कमरों या मकानों से मिली-जुली वह एक बस्ती होती है, जैसी कि संयुक्त राज्य अमेरिका या कनाडा में कृषि-गृहों की बस्तियाँ होती हैं। प्रत्येक कृषि-गृह या वास-गृह एक-दूसरे से कुछ दूरी पर स्थित होता है। संयुक्त राज्य के अलावा, अन्य देशों में भी एकाकी बस्तियाँ एक- दूसरे से दूरी पर बसी हुई होती हैं।

2. सघन (compact) **बस्तियों** में मकान या झोपड़ियाँ पास-पास सटे हुए स्थित होते हैं। इन बस्तियों को पुञ्जित या संकेन्द्रित बस्तियाँ भी कहते हैं। फिंच और ट्रेवार्था ने सघन प्रकार की बस्तियों

को न्यष्टित (nucleated)[5] बस्तियाँ या सघन (compact) बस्तियाँ दोनों ही नाम दिये हैं। विडाल डी ला ब्लाश (Blache) ने इस प्रकार की बस्तियों को पुञ्जित (clustered)[6] बस्तियाँ कहा है। ब्रूंज़ (Brunhes) ने इस प्रकार की सघन बस्तियों को संकेन्द्रित (concentrated)[7] बस्तियाँ कहा है। इनको एकत्रित बस्तियाँ (agglomerated settlements) भी कहते हैं।

सघन बस्तियों के आकार के आधार पर कई भेद होते हैं, यथा — (i) नंगला, पुरवा या पल्ली (hamlet) सबसे छोटे आकार की सघन बस्ती होती है, (ii) गाँव (village), (iii) क़स्बा (town) जो कि ग्रामीण सेवा केन्द्र (rural service centre) भी होते हैं, (iv) नगर (city)। नगरों के आकार के आधार पर नगरों के भी भेद हैं, सामान्य नगर, मैट्रोपोलिस (metropolis), मैगालोपोलिस (megalopolis), आदि।

3. संयुक्त (composite) **बस्ती** में एक गाँव के साथ उनके एक-दो पुरवे (hamlets) भी होते हैं।

4. अपखण्डित (fragmented) **बस्तियाँ** जिनमें अलग-अलग वास-गृह (homesteads) एक ही बस्ती के अन्दर एक-दूसरे के निकट बसे हुए होते हैं। बंगाल में, विशेषत: पूर्वी बंगाल में इस प्रकार की बस्तियाँ हैं। इनके घर आपस में एक-दूसरे से अलग होते हुए भी, सब घर मिलकर एक सामूहिक बस्ती बनाते हैं।

इस प्रकार की अपखण्डित बस्ती को एकाकी या प्रकीर्ण बस्ती नहीं कहा जा सकता, और इनके एक घर को भी एकाकी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये घर अमेरिका या यूरोप के फार्म-गृह की तरह के नहीं हैं। फार्म-गृह तो एक-दूसरे से अलग-अलग स्वतन्त्र बस्तियाँ होते हैं, और उनमें श्रम-विभाजन या कृषि सहकारिता के ऐसे सम्बन्ध नहीं होते, जैसे कि एक ही गाँव के विभिन्न घरों में होते हैं। परन्तु बंगाल डेल्टा की अपखण्डित बस्तियों में प्रत्येक घर एक दूसरे से अलग-अलग बसा हुआ होने पर भी, समस्त घरों में **पारस्परिक सम्बन्ध** होता है, और उन सबके मिलने से ही एक बस्ती बनती है। बंगाल डेल्टा के घर तो परस्पर एक-दूसरे घर से सामाजिक संगठन (social organisation) में, श्रम-विभाजन (division of labour) में, कृषि सहकारिता (agricultural co-operation) में, और ग्राम बिरादरी के सामुदायिक जीवन (village-community life) में सम्बन्धित होते हैं।

परन्तु हम इनको सघन प्रकार की बस्ती भी नहीं कह सकते, क्योंकि प्रत्येक बस्ती के सभी घर एक-दूसरे से अलग थोड़ी-थोड़ी दूर बसे होते हैं। प्रोफेसर स्पेट (Prof. Spate)[8] ने भी ऐसी बस्तियों को प्रकीर्ण कहना उचित नहीं समझा है।

बंगाल के अलावा भारत के कुछ अन्य क्षेत्रों में, जैसे दून घाटी में भी इस प्रकार की बस्तियाँ हैं।

इस प्रकार की बस्तियों को कौशिक (लेखक) ने अपखण्डित बस्तियाँ (fragmented settlements) नाम दिया है।